डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

बी० ए० स्नातक सेमेस्टर - I
विषय - संस्कृत, MJC - I

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ किसी स्वर या व्यञ्जन के मिलने पर उसमें जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। विसर्ग सन्धि करते समय विसर्ग से पूर्व तथा बाद वाले वर्णों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
यथा- नमः + ते = नमस्ते, ः + त् = स्
धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः, ः + ट् = ष्

सत्व सन्धि - विसर्जनीयस्य सः।
यदि विसर्ग के बाद 'त' वर्ग के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण आये तो विसर्ग (ः) का 'स्' हो जाता है।
यथा- हरिः + तनोति = हरिस् + तनोति = हरिस्तनोति
रामः + चलति = रामश्चलति, भानुश्चलति
धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः, रामष्टीकते
यदि विसर्ग के बाद क, ख या फ वर्ण आये तो विसर्ग ही रहता है।
यथा- कः + कथयति = कः कथयति
रामः + करोति = रामः करोति

रूत्व सन्धि - ससजुषो रूः।
① यदि पद के अन्त में विसर्ग का 'स्' हो तो स् के स्थान पर 'रू' हो जाता है। इस 'रू' के उ का लोप होकर 'र्' शेष रहता है।
यथा- मुनिः = मुनिस् + इव, मुनि रू + इव, मुनिर् + इव
मुनिरिव। स् → रू → र्
कविः = कविस् + अयम् = कवि रू + अयम् =
कविर् + अयम् = कतिरयम्
स् → रू → र्
② अ, आ को छोड़कर यदि अन्य स्वर के बाद

विसर्ग आए तथा उसके बाद कोई स्वर या वर्गों का तृतीय, चतुर्थ या पञ्चम वर्ण या य, व, र, ल हो तो विसर्ग का र् हो जाता है
यथा- भानुः + उदेति = भानुर् + उदेति = भानुरुदेति (: + उ = र्)
मुनिः + गच्छति = मुनिर् गच्छति = मुनिर्गच्छति (: + ग = र्)

उत्व सन्धि - अतो रोरप्लुतादप्लुते ।
यदि विसर्ग से पहले या बाद में ह्रस्व अ आता हो तो विसर्ग का र् तथा र् का उ हो जाता है। इस प्रकार विसर्ग से पूर्व का अ तथा विसर्ग का उ मिलकर 'ओ' हो जाता है। विसर्ग के बाद वाले अ का पूर्वरूप होकर ऽ का चिह्न लगा दिया जाता है।
यथा- बालकः + अयम् = बालक + र् + अयम् = बालक + उ + अयम् = बालकोऽयम्
नृपः + अयम् = नृप + र् + अयम्
नृप + उ + अयम् = नृपो + अयम्
नृपोऽयम् ।

: → र् → उ → ओ तथा अ को ऽ